शिव चालीसा

॥ दोहा ॥

जय गणेश गिरिजासुवन,
मंगल मूल सुजान ।
कहत अयोध्यादास तुम,
देउ अभय वरदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय गिरिजापति दीनदयाला ।
सदा करत सन्तन प्रतिपाला ॥
भाल चन्द्रमा सोहत नीके ।
कानन कुण्डल नाग फनी के ॥

अंग गौर शिर गंग बहाये।

मुण्डमाल तन क्षार लगाये॥

वस्त्र खाल बाघम्बर सोहे।

छवि को देखि नाग मन मोहे॥

मैना मातु कि हवे दुलारी।

वाम अंग सोहत छवि न्यारी॥

कर त्रिशूल सोहत छवि भारी।

करत सदा शत्रुन क्षयकारी॥

नंदी गणेश सोहैं तहं कैसे।

सागर मध्य कमल हैं जैसे॥

कार्तिक श्याम और गणराऊ।

या छवि कौ कहि जात न काऊ॥

देवन जबहीं जाय पुकारा।

तबहिं दुख प्रभु आप निवारा॥

किया उपद्रव तारक भारी।

देवन सब मिलि तुमहिं जुहारी॥

तुरत षडानन आप पठायौ।

लव निमेष महं मारि गिरायौ॥

आप जलंधर असुर संहारा।

सुयश तुम्हार विदित संसारा॥

त्रिपुरासुर सन युद्ध मचाई।

तबहिं कृपा कर लीन बचाई॥

किया तपहिं भागीरथ भारी।

पुरब प्रतिज्ञा तासु पुरारी॥

दानिन महं तुम सम कोउ नाहीं।

सेवक स्तुति करत सदाहीं॥

वेद माहि महिमा तुम गाई।

अकथ अनादि भेद नहीं पाई॥

प्रकटे उदधि मंथन में ज्वाला।

जरत सुरासुर भए विहाला॥

कीन्ह दया तहं करी सहाई।

नीलकंठ तब नाम कहाई॥

पूजन रामचंद्र जब कीन्हां।

जीत के लंक विभीषण दीन्हा॥

सहस कमल में हो रहे धारी।

कीन्ह परीक्षा तबहिं त्रिपुरारी॥

एक कमल प्रभु राखेउ जोई।

कमल नयन पूजन चहं सोई॥

कठिन भक्ति देखी प्रभु शंकर।

भये प्रसन्न दिए इच्छित वर॥

जय जय जय अनंत अविनाशी।

करत कृपा सबके घट वासी॥

दुष्ट सकल नित मोहि सतावैं।

भ्रमत रहौं मोहे चैन न आवैं॥

त्राहि त्राहि मैं नाथ पुकारो।

यह अवसर मोहि आन उबारो॥

ले त्रिशूल शत्रुन को मारो।

संकट से मोहिं आन उबारो॥

मात पिता भ्राता सब कोई।

संकट में पूछत नहिं कोई॥

स्वामी एक है आस तुम्हारी।

आय हरहु मम संकट भारी॥

धन निर्धन को देत सदा ही।

जो कोई जांचे सो फल पाहीं॥

अस्तुति केहि विधि करों तुम्हारी।

क्षमहु नाथ अब चूक हमारी॥

शंकर हो संकट के नाशन।

मंगल कारण विघ्न विनाशन॥

योगी यति मुनि ध्यान लगावैं।

शारद नारद शीश नवावैं॥

नमो नमो जय नमः शिवाय।

सुर ब्रह्मादिक पार न पाय॥

जो यह पाठ करे मन लाई।

ता पर होत हैं शम्भु सहाई॥

रनियां जो कोई हो अधिकारी।

पाठ करे सो पावन हारी॥

पुत्र होन की इच्छा जोई।

निश्चय शिव प्रसाद तेहि होई॥

पण्डित त्रयोदशी को लावे।

ध्यान पूर्वक होम करावे॥

त्रयोदशी व्रत करै हमेशा।

तन नहिं ताके रहै कलेशा॥

www.onlinegyani.com

धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे।

शंकर सम्मुख पाठ सुनावे॥

जन्म जन्म के पाप नसावे।

अन्त धाम शिवपुर में पावे॥

कहैं अयोध्यादास आस तुम्हारी।

जानि सकल दुख हरहु हमारी॥

॥ दोहा ॥

नित्त नेम कर प्रातः ही,

पाठ करौं चालीसा।

तुम मेरी मनोकामना,

पूर्ण करो जगदीश॥

मगसर छठि हेमन्त ऋतु,

संवत चौसठ जान।

अस्तुति चालीसा शिवहि,

पूर्ण कीन कल्याण॥

॥ इति ॥

शिव चालीसा पढ़ने के फायदे

शिव चालीसा भगवान शिव की स्तुति का एक भक्तिपूर्ण पाठ है. यह पाठ भगवान शिव के सभी गुणों और शक्तियों का वर्णन करता है और उनके आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करता है. शिव चालीसा के पाठ से कई लाभ प्राप्त होते हैं, जिनमें शामिल हैं:

1) **शांति और समृद्धि**: शिव चालीसा के पाठ से मन में शांति और समृद्धि आती है. यह पाठ भक्तों को अपने जीवन में सभी कठिनाइयों और बाधाओं को दूर करने में मदद करता है.
2) **पापों का नाश**: शिव चालीसा के पाठ से भक्तों के सभी पापों का नाश होता है. यह पाठ भक्तों को मोक्ष प्राप्त करने में मदद करता है.

3) **मनोकामनाओं की पूर्ति**: शिव चालीसा के पाठ से भक्तों की सभी मनोकामनाएं पूरी होती हैं. यह पाठ भक्तों को उनके जीवन में हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने में मदद करता है.
4) **रोगों का नाश**: शिव चालीसा के पाठ से भक्तों के सभी रोगों का नाश होता है. यह पाठ भक्तों को स्वस्थ और दीर्घायु जीवन जीने में मदद करता है.
5) **दुर्भाग्य का नाश**: शिव चालीसा के पाठ से भक्तों के सभी दुर्भाग्य का नाश होता है. यह पाठ भक्तों को सुख और समृद्धि का जीवन जीने में मदद करता है.

शिव चालीसा का पाठ करने के लिए कोई विशेष नियम नहीं है. आप इसे किसी भी समय और किसी भी स्थान पर कर सकते हैं. लेकिन यह सबसे अच्छा होता है कि आप इसे प्रातः काल उठकर स्नान करने के बाद करें.

यदि आप शिव चालीसा का पाठ नियमित रूप से करते हैं, तो आपको इन सभी लाभों को प्राप्त होगा. शिव चालीसा एक शक्तिशाली पाठ है जो भक्तों को उनके जीवन में सभी कठिनाइयों और बाधाओं को दूर करने में मदद करता है.

DOWNLOAD: श्री हनुमान चालीसा, सम्पूर्ण सुन्दरकाण्ड पाठ